



International Journal of **A**dvanced **R**esearch in **E**ducation and **T**echnolog**Y** (IJARETY)

Volume 13, Issue 2, March-April 2026

Impact Factor: 8.152



भारत रूस संबंध: सन 2014 से वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

Dr. Pushpa Indoria

Assistant Professor, Department of Political Science, Gauri Devi Govt. College for Women, Alwar, Rajasthan, India

सारांश (Abstract): भारत और रूस के बीच संबंध अंतरराष्ट्रीय राजनीति में दीर्घकाल से स्थिरता, विश्वास और पारस्परिक सहयोग के उदाहरण के रूप में देखे जाते रहे हैं। दोनों देशों के बीच रक्षा, ऊर्जा, विज्ञान, तकनीक तथा कूटनीतिक क्षेत्रों में सहयोग का एक व्यापक आधार विकसित हुआ है। विशेष रूप से वर्ष 2014 में भारत के राजनीतिक नेतृत्व में परिवर्तन और नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद भारत की विदेश नीति में अधिक सक्रिय, संतुलित और बहुआयामी दृष्टिकोण देखने को मिला। इस नई विदेश नीति के अंतर्गत भारत ने अपने पारंपरिक साझेदारों के साथ संबंधों को नए वैश्विक संदर्भों के अनुरूप आगे बढ़ाने का प्रयास किया। इसी प्रक्रिया में भारत-रूस संबंधों को भी नई ऊर्जा और नई दिशा प्राप्त हुई।

2014 के बाद दोनों देशों के बीच कई महत्वपूर्ण समझौते और सहयोगात्मक पहलें सामने आईं। रक्षा क्षेत्र में एस-400 वायु रक्षा प्रणाली समझौता, ब्रह्मोस मिसाइल परियोजना का विस्तार, संयुक्त सैन्य अभ्यास और रक्षा उत्पादन सहयोग इस संबंध की गहराई को दर्शाते हैं। ऊर्जा क्षेत्र में भी रूस भारत के लिए एक महत्वपूर्ण साझेदार के रूप में उभरा है, विशेष रूप से रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद रूस से तेल आयात में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई। इसके अतिरिक्त कुडनकुलम परमाणु ऊर्जा परियोजना तथा ऊर्जा निवेश के क्षेत्र में भी दोनों देशों के बीच सहयोग जारी रहा है।

अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी भारत और रूस कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर समन्वित दृष्टिकोण अपनाते हैं। ब्रिक्स, शंघाई सहयोग संगठन और जी-20 जैसे मंचों के माध्यम से दोनों देश वैश्विक आर्थिक सहयोग, विकास और बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की स्थापना के पक्षधर रहे हैं। बदलती वैश्विक परिस्थितियों के बावजूद दोनों देशों ने अपने संबंधों को व्यावहारिक और संतुलित तरीके से आगे बढ़ाने का प्रयास किया है। इस प्रकार 2014 के बाद भारत-रूस संबंधों में पारंपरिक सहयोग के साथ-साथ नए आयाम भी विकसित हुए हैं। वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में यह संबंध न केवल द्विपक्षीय हितों के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय राजनीति में संतुलन और सहयोग की दिशा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मुख्य शब्द: भारत-रूस संबंध, रणनीतिक साझेदारी, रक्षा सहयोग, ऊर्जा सहयोग, बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था, अंतरराष्ट्रीय राजनीति।

I. प्रस्तावना

अंतरराष्ट्रीय राजनीति में भारत और रूस के संबंध लंबे समय से विश्वास, सहयोग और रणनीतिक साझेदारी के मजबूत उदाहरण माने जाते हैं। दोनों देशों के बीच संबंध केवल कूटनीतिक औपचारिकताओं तक सीमित नहीं रहे, बल्कि समय के साथ यह संबंध राजनीतिक, आर्थिक, रक्षा, विज्ञान और तकनीकी क्षेत्रों में गहराई से विकसित हुए हैं। भारत और रूस के बीच मित्रता का आधार परस्पर सम्मान, समान हितों की समझ और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर एक-दूसरे के प्रति सहयोग की भावना पर आधारित रहा है। यही कारण है कि बदलते वैश्विक राजनीतिक परिदृश्य के बावजूद दोनों देशों के संबंध स्थिर और मजबूत बने हुए हैं।

भारत और रूस के संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि काफी महत्वपूर्ण रही है। शीत युद्ध के दौर में सोवियत संघ भारत का एक विश्वसनीय सहयोगी रहा। उस समय अंतरराष्ट्रीय राजनीति में शक्ति संतुलन के बीच भारत और सोवियत संघ के बीच सहयोग ने भारत की विदेश नीति को मजबूती प्रदान की। सोवियत संघ ने औद्योगिक विकास, रक्षा तकनीक और वैज्ञानिक अनुसंधान के क्षेत्रों में भारत को महत्वपूर्ण सहायता प्रदान की। इस सहयोग ने दोनों देशों के बीच विश्वास और मित्रता की मजबूत नींव रखी, जो आज भी भारत-रूस संबंधों की आधारशिला बनी हुई है।

सोवियत संघ के विघटन के बाद अंतरराष्ट्रीय राजनीति में व्यापक परिवर्तन देखने को मिले, किंतु इसके बावजूद भारत और रूस के संबंधों में निरंतरता बनी रही। दोनों देशों ने बदलती परिस्थितियों के अनुसार अपने संबंधों को नए रूप में विकसित किया और रणनीतिक साझेदारी को मजबूत बनाए रखा। वर्ष 2000 में भारत और रूस के बीच "रणनीतिक साझेदारी" की स्थापना ने इन संबंधों को नई दिशा दी। इसके बाद विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के लिए अनेक समझौते और पहलें की गईं, जिनसे द्विपक्षीय संबंध और अधिक मजबूत हुए।

वर्ष 2014 के बाद अंतरराष्ट्रीय राजनीति में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। वैश्विक शक्ति संतुलन, क्षेत्रीय संघर्ष, ऊर्जा सुरक्षा और आर्थिक प्रतिस्पर्धा जैसे मुद्दों ने विश्व राजनीति को प्रभावित किया है। इन परिवर्तनों के बीच भारत और रूस के संबंधों का महत्व और भी बढ़ गया है। भारत ने अपनी विदेश नीति में संतुलित और बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाया है, जिसके अंतर्गत वह विभिन्न देशों के साथ सहयोग बनाए रखते हुए अपने राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता देता है। इस संदर्भ में रूस भारत का एक महत्वपूर्ण और भरोसेमंद साझेदार बना हुआ है।

रक्षा सहयोग भारत-रूस संबंधों का सबसे महत्वपूर्ण पहलू रहा है। भारत की सैन्य क्षमता को मजबूत बनाने में रूस की भूमिका लंबे समय से रही है। भारत की रक्षा प्रणाली में रूसी तकनीक और उपकरणों का महत्वपूर्ण स्थान है। इसके अतिरिक्त संयुक्त सैन्य अभ्यास, रक्षा तकनीक का आदान-प्रदान और संयुक्त उत्पादन परियोजनाएँ दोनों देशों के बीच सामरिक विश्वास को और मजबूत करती हैं। हाल के वर्षों में ब्रह्मोस मिसाइल परियोजना और एस-400 वायु रक्षा प्रणाली जैसे समझौते इस सहयोग के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं।

ऊर्जा और आर्थिक सहयोग के क्षेत्र में भी भारत और रूस के संबंधों ने नई गति प्राप्त की है। रूस भारत के लिए ऊर्जा का एक महत्वपूर्ण स्रोत बनकर उभरा है। विशेष रूप से हाल के वर्षों में दोनों देशों के बीच तेल और गैस के क्षेत्र में सहयोग बढ़ा है। इसके साथ ही परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में कुंडनकुलम परियोजना दोनों देशों के बीच दीर्घकालिक सहयोग का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। इन परियोजनाओं ने ऊर्जा सुरक्षा के क्षेत्र में भारत की आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी भारत और रूस के बीच सहयोग महत्वपूर्ण रहा है। ब्रिक्स (BRICS), शंघाई सहयोग संगठन (SCO) और जी-20 जैसे मंचों पर दोनों देश कई वैश्विक मुद्दों पर समान दृष्टिकोण रखते हैं। दोनों देश बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के समर्थक रहे हैं और अंतरराष्ट्रीय राजनीति में संतुलन बनाए रखने के पक्षधर हैं। वैश्विक शांति, आतंकवाद विरोधी प्रयासों और आर्थिक विकास जैसे विषयों पर दोनों देशों के बीच सहयोग निरंतर बढ़ रहा है।

हालाँकि वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में भारत-रूस संबंधों के सामने कुछ चुनौतियाँ भी उभरकर सामने आई हैं। रूस-यूक्रेन युद्ध, पश्चिमी देशों के आर्थिक प्रतिबंध और बदलते भू-राजनीतिक समीकरणों ने अंतरराष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित किया है। इन परिस्थितियों में भारत ने संतुलित और स्वतंत्र विदेश नीति अपनाते हुए अपने राष्ट्रीय हितों के अनुसार निर्णय लिए हैं। यह स्थिति भारत-रूस संबंधों के अध्ययन को और अधिक महत्वपूर्ण बनाती है।

इस प्रकार 2014 से वर्तमान समय तक भारत-रूस संबंधों का अध्ययन यह समझने के लिए आवश्यक है कि बदलती वैश्विक परिस्थितियों में दोनों देशों के बीच सहयोग किस प्रकार विकसित हो रहा है और भविष्य में इन संबंधों की दिशा क्या हो सकती है।

II. भारत-रूस संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारत और रूस के बीच संबंधों का इतिहास कई दशकों पुराना है और यह संबंध परस्पर विश्वास, सहयोग और साझा हितों की मजबूत नींव पर आधारित रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय राजनीति में दोनों देशों की मित्रता को अक्सर स्थिर और भरोसेमंद संबंधों के उदाहरण के रूप में देखा जाता है। यद्यपि भारत और रूस भौगोलिक रूप से एक-दूसरे से दूर स्थित हैं, फिर भी राजनीतिक, आर्थिक और सामरिक हितों ने दोनों देशों को लंबे समय से एक-दूसरे के निकट रखा है। इन संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझे बिना वर्तमान समय में भारत-रूस संबंधों के स्वरूप को सही ढंग से समझना संभव नहीं है।

भारत और रूस के बीच संपर्क का प्रारंभिक स्वरूप औपनिवेशिक काल में देखा जा सकता है, जब भारत ब्रिटिश शासन के अधीन था और रूस एक महत्वपूर्ण यूरोपीय शक्ति के रूप में उभर रहा था। उस समय दोनों देशों के बीच प्रत्यक्ष राजनीतिक संबंध सीमित थे, किंतु सांस्कृतिक और बौद्धिक स्तर पर कुछ संपर्क अवश्य स्थापित हुए। रूसी विचारकों और लेखकों ने भारतीय दर्शन और संस्कृति के प्रति गहरी रुचि दिखाई। इसी प्रकार भारत में भी रूसी साहित्य और विचारों का प्रभाव धीरे-धीरे बढ़ने लगा। इस सांस्कृतिक संपर्क ने भविष्य में दोनों देशों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों की आधारभूमि तैयार की।

भारत की स्वतंत्रता के बाद भारत और सोवियत संघ के बीच औपचारिक संबंध स्थापित हुए। वर्ष 1947 में भारत के स्वतंत्र राष्ट्र बनने के बाद सोवियत संघ ने भारत के साथ राजनयिक संबंध स्थापित किए। प्रारंभिक वर्षों में दोनों देशों के संबंध धीरे-धीरे विकसित हुए, किंतु 1950 के दशक के बाद यह संबंध अधिक मजबूत होने लगे। उस समय भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की विदेश नीति गुटनिरपेक्षता के सिद्धांत पर आधारित थी। भारत ने किसी भी सैन्य गुट में शामिल होने के बजाय स्वतंत्र विदेश नीति अपनाने का निर्णय लिया। सोवियत संघ ने इस नीति का सम्मान किया और भारत के साथ सहयोग बढ़ाने में रुचि दिखाई।

1950 और 1960 के दशकों में भारत और सोवियत संघ के बीच आर्थिक और औद्योगिक सहयोग में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। सोवियत संघ ने भारत के औद्योगिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। भारी उद्योगों की स्थापना, इस्पात संयंत्रों का निर्माण और वैज्ञानिक अनुसंधान के क्षेत्र में सहयोग के माध्यम से भारत की आर्थिक प्रगति में सोवियत संघ की भूमिका महत्वपूर्ण रही। भिलाई इस्पात संयंत्र जैसे बड़े औद्योगिक प्रकल्प इस सहयोग के प्रमुख उदाहरण हैं। इन परियोजनाओं ने भारत के औद्योगिक विकास को गति प्रदान की और दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंधों को मजबूत बनाया।

रक्षा क्षेत्र में भी भारत और सोवियत संघ के बीच सहयोग धीरे-धीरे बढ़ता गया। भारत की सैन्य शक्ति को मजबूत बनाने में सोवियत संघ ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। भारतीय सेना, वायु सेना और नौसेना के आधुनिकीकरण में सोवियत तकनीक और उपकरणों का व्यापक उपयोग हुआ। मिग लड़ाकू विमानों, टैंकों और अन्य सैन्य उपकरणों की आपूर्ति के माध्यम से सोवियत संघ भारत का प्रमुख रक्षा सहयोगी बन गया। इस सहयोग ने दोनों देशों के बीच सामरिक विश्वास को और अधिक मजबूत किया।

भारत-सोवियत संबंधों का सबसे महत्वपूर्ण चरण वर्ष 1971 में सामने आया, जब दोनों देशों के बीच भारत-सोवियत मैत्री और सहयोग संधि पर हस्ताक्षर किए गए। यह संधि उस समय की अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों में अत्यंत महत्वपूर्ण थी। इस समझौते ने दोनों देशों के बीच राजनीतिक, आर्थिक और रक्षा सहयोग को नई मजबूती प्रदान की। इसी वर्ष भारत और पाकिस्तान के बीच हुए युद्ध के दौरान सोवियत संघ ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत का समर्थन किया। इस घटना ने दोनों देशों के बीच विश्वास और सहयोग को और गहरा किया।

शीत युद्ध के दौरान भारत और सोवियत संघ के संबंध लगातार मजबूत होते रहे। उस समय अंतरराष्ट्रीय राजनीति में दो प्रमुख शक्ति गुट मौजूद थे—एक अमेरिका के नेतृत्व वाला पश्चिमी गुट और दूसरा सोवियत संघ के नेतृत्व वाला समाजवादी गुट। भारत ने गुटनिरपेक्ष नीति अपनाई, किंतु सोवियत संघ के साथ उसके संबंध विशेष रूप से घनिष्ठ बने रहे। यह संबंध केवल राजनीतिक स्तर तक सीमित नहीं थे, बल्कि विज्ञान, तकनीक, शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्रों में भी सहयोग बढ़ता गया।

1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद अंतरराष्ट्रीय राजनीति में बड़ा परिवर्तन आया। सोवियत संघ के स्थान पर रूस एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उभरा। इस परिवर्तन ने भारत-रूस संबंधों के सामने नई चुनौतियाँ प्रस्तुत कीं। प्रारंभिक वर्षों में रूस के भीतर राजनीतिक और आर्थिक अस्थिरता के कारण द्विपक्षीय संबंधों की गति कुछ धीमी हुई। फिर भी दोनों देशों ने अपने ऐतिहासिक संबंधों को बनाए रखने और उन्हें नई परिस्थितियों के अनुरूप ढालने का प्रयास किया।

1990 के दशक के अंत और 2000 के दशक की शुरुआत में भारत और रूस के बीच संबंधों को पुनः सुदृढ़ करने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास किए गए। वर्ष 2000 में दोनों देशों के बीच रणनीतिक साझेदारी (Strategic Partnership) की स्थापना की गई। इस समझौते ने द्विपक्षीय संबंधों को एक नए स्तर पर पहुँचा दिया। इसके बाद दोनों देशों के बीच वार्षिक शिखर सम्मेलनों की परंपरा शुरू हुई, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।

2000 के बाद के वर्षों में भारत और रूस के बीच रक्षा, ऊर्जा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में सहयोग लगातार बढ़ता गया। ब्रह्मोस मिसाइल परियोजना जैसे संयुक्त रक्षा कार्यक्रम इस सहयोग के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। इसके अतिरिक्त परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में कुडनकुलम परियोजना ने दोनों देशों के बीच दीर्घकालिक सहयोग को और मजबूत बनाया।

इस प्रकार भारत-रूस संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि यह दर्शाती है कि दोनों देशों के बीच मित्रता केवल तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों का परिणाम नहीं है, बल्कि यह कई दशकों के विश्वास, सहयोग और साझा हितों पर आधारित है। समय के साथ अंतरराष्ट्रीय राजनीति में अनेक परिवर्तन हुए, किंतु इन परिवर्तनों के बावजूद भारत और रूस के बीच संबंधों की मूल भावना स्थिर और सकारात्मक बनी रही है। यही ऐतिहासिक आधार आज भी भारत-रूस संबंधों को मजबूती प्रदान करता है और भविष्य में इन संबंधों के और अधिक विकसित होने की संभावना को मजबूत बनाता है।

2014 के बाद भारत-रूस संबंधों का नया चरण

वर्ष 2014 भारत-रूस संबंधों के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में देखा जाता है। इसी वर्ष भारत में राजनीतिक नेतृत्व में परिवर्तन हुआ और नरेंद्र मोदी देश के प्रधानमंत्री बने। नई सरकार के गठन के साथ भारत की विदेश नीति में भी सक्रियता और व्यावहारिकता का नया दृष्टिकोण सामने आया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत की विदेश नीति को अधिक गतिशील, संतुलित और बहुआयामी बनाने पर विशेष जोर दिया। उन्होंने विभिन्न देशों के साथ संबंधों को मजबूत करने की नीति अपनाई, किंतु इसके साथ ही भारत के पारंपरिक और विश्वसनीय मित्र रूस के साथ संबंधों को भी नई ऊर्जा प्रदान की। इस प्रकार 2014 के बाद भारत-रूस संबंधों में निरंतरता के साथ-साथ नई दिशा और गति भी दिखाई देती है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने रूस के साथ अपने रणनीतिक संबंधों को बनाए रखने और उन्हें और अधिक व्यापक बनाने का प्रयास किया। वर्ष 2014 में ही रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन भारत आए और दोनों देशों के बीच कई महत्वपूर्ण समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए। इस यात्रा के दौरान रक्षा, ऊर्जा, परमाणु ऊर्जा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में सहयोग को मजबूत करने पर सहमति बनी। इसी समय भारत और रूस के बीच संबंधों को “विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदारी” (Special and Privileged Strategic Partnership) के रूप में आगे बढ़ाने पर भी बल दिया गया। यह दर्जा दोनों देशों के बीच गहरे विश्वास और दीर्घकालिक सहयोग का प्रतीक माना जाता है।

वर्ष 2015 में भारत और रूस के बीच रक्षा तथा ऊर्जा सहयोग को और अधिक मजबूत करने के प्रयास किए गए। इसी अवधि में भारत ने रूस के साथ कई रक्षा परियोजनाओं पर काम आगे बढ़ाया। कामोव-226T हेलीकॉप्टरों के संयुक्त उत्पादन की योजना इसी समय सामने आई, जिसमें भारत और रूस मिलकर भारत में हेलीकॉप्टर निर्माण करने पर सहमत हुए। यह पहल भारत की “मेक इन इंडिया” नीति के अनुरूप थी और इससे दोनों देशों के बीच रक्षा उत्पादन में सहयोग को नई दिशा मिली।

वर्ष 2016 भारत-रूस संबंधों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण रहा। इसी वर्ष भारत और रूस के बीच एस-400 वायु रक्षा प्रणाली खरीदने का समझौता हुआ। यह समझौता लगभग 5 अरब अमेरिकी डॉलर का था और इसे भारत की रक्षा क्षमता को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना गया। इसी वर्ष ब्रह्मोस मिसाइल परियोजना को भी और अधिक विकसित करने पर दोनों देशों के बीच सहमति बनी। ब्रह्मोस मिसाइल भारत और रूस के संयुक्त सहयोग का एक सफल उदाहरण है, जिसे दोनों देशों ने मिलकर विकसित किया है और जिसे विश्व की सबसे तेज सुपरसोनिक क्रूज मिसाइलों में से एक माना जाता है।

वर्ष 2017 और 2018 के दौरान भी भारत-रूस संबंधों में निरंतरता बनी रही। इन वर्षों में दोनों देशों के बीच ऊर्जा और रक्षा सहयोग पर विशेष ध्यान दिया गया। भारत की सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी ONGC Videsh ने रूस की तेल परियोजनाओं में निवेश किया, जिससे दोनों देशों के आर्थिक संबंध मजबूत हुए। इसके अतिरिक्त परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में भी सहयोग जारी रहा। तमिलनाडु में स्थित कुडनकुलम परमाणु ऊर्जा परियोजना भारत और रूस के सहयोग का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है, जिसमें रूस की तकनीकी सहायता से परमाणु ऊर्जा संयंत्रों का निर्माण किया जा रहा है।

वर्ष 2019 में भारत और रूस के संबंधों में एक और महत्वपूर्ण पहल देखने को मिली, जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रूस के शहर व्लादिवोस्तोक गए और वहाँ आयोजित पूर्वी आर्थिक मंच (Eastern Economic Forum) में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। इस यात्रा के दौरान भारत ने रूस के सुदूर पूर्व (Far East) क्षेत्र के विकास के लिए 1 अरब डॉलर की ऋण सहायता देने की घोषणा की। यह पहल दोनों देशों के बीच आर्थिक और क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम थी। इसी यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच ऊर्जा, खनिज, जहाज निर्माण और व्यापार के क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने पर भी सहमति बनी।

वर्ष 2020 और 2021 के दौरान कोविड-19 महामारी के बावजूद भारत और रूस के संबंधों में निरंतर संपर्क बना रहा। दिसंबर 2021 में रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन भारत आए और नई दिल्ली में आयोजित शिखर सम्मेलन में भाग लिया। इस बैठक के दौरान दोनों देशों के बीच कई महत्वपूर्ण समझौते हुए। विशेष रूप से AK-203 अर्सॉल्ट राइफल के संयुक्त उत्पादन का समझौता हुआ, जिसके अंतर्गत उत्तर प्रदेश के अमेठी में भारत-रूस संयुक्त उद्यम के माध्यम से इन राइफलों का निर्माण किया जा रहा है। यह परियोजना भारत की रक्षा आत्मनिर्भरता की दिशा में महत्वपूर्ण मानी जाती है।

वर्ष 2022 में रूस-यूक्रेन युद्ध शुरू होने के बाद वैश्विक राजनीति में बड़ा परिवर्तन देखने को मिला। इस युद्ध के कारण रूस पर पश्चिमी देशों द्वारा कई आर्थिक प्रतिबंध लगाए गए। इसके बावजूद भारत और रूस के बीच संबंधों में निरंतरता बनी रही। इस अवधि में भारत ने रूस से कच्चे तेल का आयात बढ़ाया। 2021 से पहले भारत रूस से बहुत कम मात्रा में तेल आयात करता था, किंतु 2022 और 2023 के दौरान रूस भारत के प्रमुख तेल आपूर्तिकर्ताओं में शामिल हो गया। विभिन्न अंतरराष्ट्रीय आंकड़ों के अनुसार 2023 तक रूस भारत को तेल आपूर्ति करने वाले प्रमुख देशों में से एक बन चुका था।

वर्ष 2023 में भारत और रूस के बीच आर्थिक सहयोग में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई। दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार में तेजी आई और यह लगभग 60 अरब अमेरिकी डॉलर के आसपास पहुँच गया, जो पहले की तुलना में काफी अधिक था। इस वृद्धि का मुख्य कारण ऊर्जा व्यापार और उर्वरकों के आयात में वृद्धि था। इसके अतिरिक्त दोनों देशों ने व्यापार को और बढ़ाने तथा भुगतान प्रणाली को सुगम बनाने के लिए भी प्रयास किए।

वर्ष 2024 में भी भारत और रूस के बीच उच्च स्तर के संपर्क जारी रहे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के बीच कई अवसरों पर वार्ता हुई। 2024 में दोनों देशों ने ऊर्जा, रक्षा और तकनीकी सहयोग को और आगे बढ़ाने पर जोर दिया। इसी अवधि

में ब्रह्मोस मिसाइल के निर्यात तथा रक्षा सहयोग के अन्य क्षेत्रों पर भी चर्चा हुई। इसके अतिरिक्त अंतरराष्ट्रीय मंचों जैसे ब्रिक्स और शंघाई सहयोग संगठन के माध्यम से भी दोनों देशों के बीच सहयोग जारी रहा।

वर्ष 2025 तक आते-आते भारत-रूस संबंध वैश्विक राजनीति में एक स्थिर और महत्वपूर्ण साझेदारी के रूप में स्थापित हो चुके हैं। दोनों देश रक्षा, ऊर्जा, अंतरिक्ष, विज्ञान और प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में सहयोग को और मजबूत करने की दिशा में कार्य कर रहे हैं। भारत की ऊर्जा सुरक्षा में रूस की भूमिका बढ़ती जा रही है, जबकि रूस के लिए भारत एक बड़ा और विश्वसनीय आर्थिक साझेदार बनकर उभर रहा है।

इस प्रकार 2014 से वर्तमान परिप्रेक्ष्य तक देखा जाए तो भारत-रूस संबंधों ने एक नया और विस्तृत रूप ग्रहण किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने रूस के साथ अपने पारंपरिक संबंधों को बनाए रखते हुए उन्हें नई परिस्थितियों के अनुरूप और अधिक मजबूत बनाया है। रक्षा, ऊर्जा, व्यापार और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के क्षेत्रों में बढ़ता समन्वय यह दर्शाता है कि आने वाले समय में भी भारत और रूस के बीच रणनीतिक साझेदारी वैश्विक राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहेगी।

III. रक्षा और सामरिक सहयोग

भारत और रूस के बीच रक्षा और सामरिक सहयोग दोनों देशों के संबंधों की सबसे मजबूत और महत्वपूर्ण आधारशिला रहा है। लंबे समय से यह सहयोग आपसी विश्वास, रणनीतिक समझ और साझा सुरक्षा हितों पर आधारित रहा है। शीत युद्ध काल से लेकर वर्तमान समय तक रूस भारत का प्रमुख रक्षा सहयोगी रहा है और भारत की सैन्य क्षमता के विकास में रूस की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारत की थल सेना, वायु सेना और नौसेना में उपयोग किए जाने वाले अनेक प्रमुख सैन्य उपकरण रूस से प्राप्त हुए हैं या रूस के सहयोग से विकसित किए गए हैं। इस प्रकार रक्षा सहयोग भारत-रूस संबंधों के सबसे स्थायी और प्रभावशाली पहलुओं में से एक रहा है।

भारत-रूस रक्षा सहयोग का ऐतिहासिक महत्व विशेष रूप से शीत युद्ध के समय से देखा जा सकता है। उस समय सोवियत संघ भारत का प्रमुख रक्षा साझेदार था। सोवियत संघ ने भारत को मिग लड़ाकू विमान, टैंक, पनडुब्बियाँ और अन्य आधुनिक सैन्य उपकरण उपलब्ध कराए। इन उपकरणों ने भारत की सैन्य शक्ति को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। समय के साथ यह सहयोग और अधिक गहरा होता गया और भारत की रक्षा प्रणाली में रूसी तकनीक का व्यापक उपयोग होने लगा। आज भी भारत के कई प्रमुख सैन्य प्लेटफॉर्म रूसी तकनीक पर आधारित हैं।

भारत की रक्षा प्रणाली में रूसी उपकरणों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। विभिन्न अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टों के अनुसार भारत के रक्षा उपकरणों का एक बड़ा हिस्सा लंबे समय तक रूस या पूर्व सोवियत संघ से प्राप्त हुआ है। भारतीय वायु सेना में सुखोई-30 एमकेआई जैसे आधुनिक लड़ाकू विमान रूस के सहयोग से विकसित और निर्मित किए गए हैं। यह विमान भारत की वायु शक्ति का एक प्रमुख आधार है। इसके अतिरिक्त मिग-29 और मिग-21 जैसे लड़ाकू विमानों ने भी लंबे समय तक भारतीय वायु सेना की क्षमता को मजबूत बनाए रखने में योगदान दिया है।

भारत और रूस के बीच रक्षा सहयोग का एक अत्यंत महत्वपूर्ण उदाहरण एस-400 वायु रक्षा प्रणाली का समझौता है। वर्ष 2018 में भारत ने रूस के साथ लगभग 5 अरब अमेरिकी डॉलर का समझौता किया, जिसके अंतर्गत भारत को एस-400 ट्रायम्फ वायु रक्षा प्रणाली प्राप्त होनी थी। यह प्रणाली अत्याधुनिक वायु रक्षा प्रणाली मानी जाती है, जो लंबी दूरी से आने वाले विमानों, मिसाइलों और ड्रोन को नष्ट करने में सक्षम है। इस प्रणाली की तैनाती से भारत की वायु सुरक्षा क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। 2021 से इस प्रणाली की आपूर्ति शुरू हुई और धीरे-धीरे इसे भारत की सुरक्षा संरचना में शामिल किया गया।

भारत-रूस रक्षा सहयोग का एक और महत्वपूर्ण उदाहरण ब्रह्मोस मिसाइल परियोजना है। ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल भारत और रूस के संयुक्त सहयोग से विकसित की गई है। यह मिसाइल लगभग मैक 2.8 की गति से उड़ान भरने में सक्षम है और इसे विश्व की सबसे तेज सुपरसोनिक क्रूज मिसाइलों में से एक माना जाता है। ब्रह्मोस मिसाइल को भारत की थल सेना, नौसेना और वायु सेना में शामिल किया गया है। इसके अतिरिक्त हाल के वर्षों में भारत ने इस मिसाइल का निर्यात भी शुरू किया है, जिससे यह परियोजना दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग का एक सफल उदाहरण बन गई है।

भारतीय वायु सेना में सुखोई और मिग लड़ाकू विमानों का योगदान भी अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। सुखोई-30 एमकेआई लड़ाकू विमान भारत और रूस के संयुक्त सहयोग का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यह विमान भारत में हिंदुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड (HAL) द्वारा

रूस के सहयोग से निर्मित किया जाता है। यह विमान अत्याधुनिक तकनीक से लैस है और भारत की वायु शक्ति को मजबूत बनाने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके अलावा मिग-29 लड़ाकू विमान भी भारतीय वायु सेना और नौसेना में उपयोग किए जाते हैं।

भारतीय थल सेना की शक्ति को बढ़ाने में टी-90 टैंक का भी महत्वपूर्ण योगदान है। भारत ने रूस से टी-90 टैंकों की खरीद की और बाद में इन टैंकों का उत्पादन भारत में भी शुरू किया गया। यह पहल भारत की रक्षा उत्पादन क्षमता को मजबूत बनाने के साथ-साथ रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम रही है। इसके अतिरिक्त भारत और रूस के बीच अन्य सैन्य उपकरणों और प्रणालियों के उत्पादन में भी सहयोग किया गया है।

भारत और रूस के बीच संयुक्त सैन्य अभ्यास भी नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं। "इंद्र" (INDRA) नामक संयुक्त सैन्य अभ्यास दोनों देशों की सेनाओं के बीच सहयोग और समन्वय को मजबूत बनाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। यह अभ्यास थल सेना, नौसेना और वायु सेना के स्तर पर आयोजित किया जाता है। इन अभ्यासों के माध्यम से दोनों देशों की सेनाएँ आधुनिक युद्ध तकनीकों, रणनीतियों और सामरिक समन्वय का अभ्यास करती हैं। इससे दोनों देशों के सैन्य संबंधों को और अधिक मजबूती मिलती है।

रक्षा क्षेत्र में प्रौद्योगिकी हस्तांतरण भी भारत-रूस सहयोग का एक महत्वपूर्ण पहलू है। रूस ने कई रक्षा परियोजनाओं में भारत को तकनीकी सहयोग प्रदान किया है, जिससे भारत की रक्षा उत्पादन क्षमता में वृद्धि हुई है। भारत की "आत्मनिर्भर भारत" और "मेक इन इंडिया" जैसी नीतियों के अंतर्गत रूस के साथ संयुक्त उत्पादन और तकनीकी सहयोग को विशेष महत्व दिया जा रहा है। उदाहरण के रूप में AK-203 असॉल्ट राइफल के संयुक्त उत्पादन की परियोजना उल्लेखनीय है, जिसके अंतर्गत उत्तर प्रदेश के अमेठी में इन राइफलों का निर्माण किया जा रहा है।

भारत और रूस के बीच रक्षा क्षेत्र में संयुक्त अनुसंधान और उत्पादन की दिशा में भी महत्वपूर्ण प्रयास किए जा रहे हैं। दोनों देश नई रक्षा तकनीकों के विकास, मिसाइल प्रणालियों, सैन्य उपकरणों और उन्नत रक्षा प्रणालियों के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। यह सहयोग केवल रक्षा उपकरणों की खरीद तक सीमित नहीं है, बल्कि यह संयुक्त विकास और उत्पादन की दिशा में भी आगे बढ़ रहा है।

अंतरराष्ट्रीय राजनीति के वर्तमान संदर्भ में भारत-रूस रक्षा सहयोग का महत्व और भी बढ़ जाता है। हिंद-प्रशांत क्षेत्र में बदलते शक्ति संतुलन और क्षेत्रीय सुरक्षा चुनौतियों के बीच भारत अपनी सामरिक क्षमता को मजबूत बनाने का प्रयास कर रहा है। इस संदर्भ में रूस के साथ रक्षा सहयोग भारत की सुरक्षा नीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बना हुआ है। रूस भी भारत को एशिया में एक महत्वपूर्ण रणनीतिक साझेदार के रूप में देखता है।

इस प्रकार भारत और रूस के बीच रक्षा और सामरिक सहयोग केवल सैन्य उपकरणों के आदान-प्रदान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह दीर्घकालिक रणनीतिक साझेदारी का महत्वपूर्ण आधार है। यह सहयोग दोनों देशों के बीच विश्वास, तकनीकी साझेदारी और साझा सुरक्षा हितों पर आधारित है। आने वाले समय में भी यह सहयोग भारत-रूस संबंधों का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बना रहेगा।

IV. ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग

भारत और रूस के बीच ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग पिछले कुछ वर्षों में तेजी से विकसित हुआ है और यह दोनों देशों के द्विपक्षीय संबंधों का एक महत्वपूर्ण आधार बन चुका है। वैश्विक स्तर पर ऊर्जा संसाधनों की बढ़ती मांग और ऊर्जा सुरक्षा की आवश्यकता ने भारत और रूस को इस क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने के लिए प्रेरित किया है। रूस विश्व के सबसे बड़े ऊर्जा उत्पादक देशों में से एक है, जबकि भारत ऊर्जा के सबसे बड़े उपभोक्ता देशों में शामिल है। इस प्रकार दोनों देशों के हित इस क्षेत्र में एक-दूसरे के पूरक हैं। यही कारण है कि ऊर्जा सहयोग भारत-रूस रणनीतिक साझेदारी का एक प्रमुख आयाम बन गया है।

भारत-रूस ऊर्जा सहयोग का महत्व विशेष रूप से भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए समझा जा सकता है। भारत तेजी से विकसित हो रही अर्थव्यवस्था है और उसकी ऊर्जा की मांग लगातार बढ़ रही है। औद्योगिक विकास, शहरीकरण और बढ़ती जनसंख्या के कारण ऊर्जा की खपत में निरंतर वृद्धि हो रही है। ऐसे में भारत के लिए यह आवश्यक है कि वह ऊर्जा आपूर्ति के विश्वसनीय और दीर्घकालिक स्रोत विकसित करे। रूस इस संदर्भ में भारत के लिए एक महत्वपूर्ण और भरोसेमंद ऊर्जा साझेदार के रूप में उभरा है।

रूस से भारत को कच्चे तेल की आपूर्ति पिछले कुछ वर्षों में उल्लेखनीय रूप से बढ़ी है। वर्ष 2021 से पहले भारत द्वारा रूस से तेल का आयात बहुत सीमित मात्रा में किया जाता था। उस समय भारत मुख्य रूप से मध्य-पूर्व के देशों से तेल आयात करता था। किंतु

वर्ष 2022 में रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा बाजार में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। पश्चिमी देशों द्वारा रूस पर लगाए गए आर्थिक प्रतिबंधों के कारण रूस ने अपने तेल निर्यात के लिए नए बाजारों की तलाश शुरू की। इस परिस्थिति में भारत और चीन जैसे देशों ने रूस से तेल खरीद में वृद्धि की। इसके परिणामस्वरूप रूस भारत के प्रमुख तेल आपूर्तिकर्ताओं में शामिल हो गया।

2023 और 2024 के दौरान भारत द्वारा रूस से तेल आयात में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई। विभिन्न अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसियों के अनुसार 2024 तक रूस भारत के लिए कच्चे तेल का सबसे बड़ा या प्रमुख आपूर्तिकर्ता बन चुका था। कुछ महीनों में भारत के कुल तेल आयात का लगभग 30 से 35 प्रतिशत हिस्सा रूस से आने लगा। यह स्थिति भारत की ऊर्जा नीति में एक महत्वपूर्ण बदलाव को दर्शाती है। रूस से अपेक्षाकृत कम कीमत पर मिलने वाले तेल ने भारत की ऊर्जा लागत को नियंत्रित रखने में भी सहायता की।

रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद ऊर्जा व्यापार में आई यह वृद्धि भारत-रूस आर्थिक संबंधों को भी मजबूत करने में सहायक सिद्ध हुई है। ऊर्जा व्यापार के कारण दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार में भी तेजी से वृद्धि हुई। वर्ष 2023 में भारत और रूस के बीच कुल व्यापार लगभग 60 अरब अमेरिकी डॉलर के आसपास पहुँच गया, जो पहले की तुलना में काफी अधिक था। इसमें ऊर्जा व्यापार की प्रमुख भूमिका रही।

कच्चे तेल के अतिरिक्त भारत और रूस के बीच प्राकृतिक गैस के क्षेत्र में भी सहयोग विकसित हुआ है। रूस विश्व के सबसे बड़े प्राकृतिक गैस उत्पादक देशों में से एक है और वह इस क्षेत्र में उन्नत तकनीक और संसाधनों से संपन्न है। भारत ने रूस की गैस परियोजनाओं में निवेश भी किया है। उदाहरण के रूप में भारतीय कंपनियों ने रूस की साखालिन-1 (Sakhalin-1) जैसी परियोजनाओं में भागीदारी की है। इस प्रकार दोनों देशों के बीच ऊर्जा सहयोग केवल आयात-निर्यात तक सीमित नहीं है, बल्कि निवेश और संयुक्त परियोजनाओं के रूप में भी विकसित हुआ है।

परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में भारत और रूस का सहयोग विशेष रूप से उल्लेखनीय है। तमिलनाडु में स्थित कुडनकुलम परमाणु ऊर्जा परियोजना इस सहयोग का सबसे प्रमुख उदाहरण है। इस परियोजना में रूस की तकनीकी सहायता से परमाणु ऊर्जा संयंत्र स्थापित किए गए हैं। कुडनकुलम परियोजना के अंतर्गत कई परमाणु ऊर्जा इकाइयों का निर्माण किया गया है और भविष्य में भी नई इकाइयों के निर्माण की योजना है। यह परियोजना भारत की ऊर्जा उत्पादन क्षमता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है और दोनों देशों के बीच दीर्घकालिक ऊर्जा सहयोग को दर्शाती है।

इसके अतिरिक्त LNG (Liquefied Natural Gas) और अन्य ऊर्जा निवेश परियोजनाओं में भी भारत और रूस के बीच सहयोग बढ़ रहा है। भारतीय कंपनियाँ रूस के ऊर्जा क्षेत्र में निवेश कर रही हैं, जबकि रूस भारत के ऊर्जा बाजार में अपनी भागीदारी बढ़ाने में रुचि दिखा रहा है। ऊर्जा परिवहन, भंडारण और आपूर्ति से संबंधित परियोजनाओं में भी दोनों देशों के बीच सहयोग की संभावनाएँ बढ़ रही हैं।

ऊर्जा सुरक्षा के संदर्भ में रूस की भूमिका भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बनती जा रही है। भारत की ऊर्जा नीति का एक प्रमुख उद्देश्य ऊर्जा स्रोतों का विविधीकरण करना है, ताकि किसी एक क्षेत्र या देश पर अत्यधिक निर्भरता न रहे। रूस के साथ ऊर्जा सहयोग भारत को इस लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करता है। इसके माध्यम से भारत को स्थिर और दीर्घकालिक ऊर्जा आपूर्ति सुनिश्चित करने का अवसर मिलता है।

भारत और रूस के बीच दीर्घकालिक ऊर्जा समझौते भी इस सहयोग को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। दोनों देशों ने ऊर्जा क्षेत्र में दीर्घकालिक साझेदारी विकसित करने की दिशा में कई पहलों की हैं। तेल, गैस, परमाणु ऊर्जा और अन्य ऊर्जा परियोजनाओं में सहयोग के माध्यम से दोनों देश ऊर्जा क्षेत्र में एक मजबूत साझेदारी स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं।

इस प्रकार ऊर्जा क्षेत्र में भारत-रूस सहयोग दोनों देशों के संबंधों का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और रणनीतिक आयाम बन चुका है। ऊर्जा व्यापार, निवेश, परमाणु ऊर्जा परियोजनाएँ और गैस सहयोग जैसे विभिन्न पहलुओं ने इस साझेदारी को और अधिक मजबूत बनाया है। भविष्य में भी ऊर्जा क्षेत्र में बढ़ता सहयोग भारत और रूस के बीच संबंधों को और अधिक सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

व्यापार और आर्थिक सहयोग

भारत और रूस के बीच व्यापार और आर्थिक सहयोग पिछले कुछ वर्षों में तेजी से विकसित हुआ है और यह दोनों देशों के द्विपक्षीय संबंधों का एक महत्वपूर्ण आधार बन चुका है। यद्यपि ऐतिहासिक रूप से भारत-रूस संबंधों में रक्षा और सामरिक सहयोग का महत्व अधिक रहा है, लेकिन वर्तमान समय में आर्थिक और व्यापारिक संबंधों को भी उतना ही महत्व दिया जाने लगा है। दोनों देशों ने यह

महसूस किया है कि दीर्घकालिक और स्थायी साझेदारी के लिए आर्थिक सहयोग का विस्तार आवश्यक है। इसी कारण हाल के वर्षों में भारत और रूस ने व्यापार, निवेश, ऊर्जा, परिवहन तथा तकनीकी सहयोग के विभिन्न क्षेत्रों में अपने संबंधों को मजबूत करने का प्रयास किया है।

भारत-रूस व्यापार संबंधों का विकास विशेष रूप से 21वीं सदी के प्रारंभ से अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। वर्ष 2000 के बाद दोनों देशों ने अपने आर्थिक संबंधों को नई दिशा देने के लिए कई समझौते किए। भारत और रूस के बीच वार्षिक शिखर सम्मेलनों के दौरान व्यापार और निवेश बढ़ाने पर लगातार जोर दिया गया। दोनों देशों ने द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ाने के लिए व्यापारिक बाधाओं को कम करने, निवेश को प्रोत्साहित करने और नई आर्थिक परियोजनाओं को विकसित करने की दिशा में कार्य किया।

हाल के वर्षों में भारत और रूस के बीच द्विपक्षीय व्यापार में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। विशेष रूप से रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद ऊर्जा व्यापार में वृद्धि के कारण दोनों देशों के व्यापारिक संबंधों में तेजी आई। वर्ष 2021 से पहले भारत और रूस के बीच कुल व्यापार लगभग 10 से 12 अरब अमेरिकी डॉलर के आसपास था, किंतु 2023 तक यह बढ़कर लगभग 60 से 65 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुँच गया। 2024 के दौरान भी व्यापारिक सहयोग में वृद्धि जारी रही। इस वृद्धि का प्रमुख कारण रूस से कच्चे तेल, उर्वरकों और ऊर्जा संसाधनों का आयात रहा है।

हालाँकि व्यापार में वृद्धि के साथ-साथ व्यापार संतुलन का प्रश्न भी महत्वपूर्ण बन गया है। वर्तमान समय में भारत रूस से बड़ी मात्रा में ऊर्जा संसाधन आयात करता है, जिसके कारण व्यापार संतुलन रूस के पक्ष में झुका हुआ दिखाई देता है। इस स्थिति को संतुलित करने के लिए भारत अपने निर्यात को बढ़ाने का प्रयास कर रहा है। भारत रूस को औषधियाँ, कृषि उत्पाद, चाय, कॉफी, वस्त्र, मशीनरी और आईटी सेवाएँ निर्यात करता है। दोनों देशों के बीच व्यापार संतुलन को बेहतर बनाने के लिए नए क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने पर भी चर्चा की जा रही है।

भारत और रूस के बीच आर्थिक सहयोग को बढ़ाने के लिए परिवहन और कनेक्टिविटी परियोजनाएँ भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। दोनों देशों ने यह महसूस किया है कि व्यापार को बढ़ाने के लिए बेहतर परिवहन मार्गों और लॉजिस्टिक व्यवस्था की आवश्यकता है। इसी उद्देश्य से विभिन्न अंतरराष्ट्रीय परिवहन परियोजनाओं पर कार्य किया जा रहा है, जो भारत और रूस के बीच व्यापार को अधिक सुगम और तेज बना सकती हैं।

इन परियोजनाओं में सबसे महत्वपूर्ण है अंतरराष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा (International North-South Transport Corridor – INSTC)। यह एक बहु-देशीय परिवहन परियोजना है, जिसका उद्देश्य भारत, रूस और यूरोप के बीच व्यापार को आसान बनाना है। इस गलियारे के माध्यम से भारत से रूस और यूरोप तक माल परिवहन के लिए एक वैकल्पिक और अपेक्षाकृत कम समय लेने वाला मार्ग उपलब्ध होता है। इस परियोजना में भारत, रूस, ईरान और कई अन्य देश शामिल हैं। विशेषज्ञों के अनुसार INSTC के माध्यम से परिवहन समय और लागत दोनों में कमी आ सकती है, जिससे भारत-रूस व्यापार को और अधिक गति मिलने की संभावना है।

भारत और रूस के बीच निवेश सहयोग भी आर्थिक संबंधों का एक महत्वपूर्ण पहलू है। भारतीय कंपनियों ने रूस के ऊर्जा और खनिज क्षेत्रों में निवेश किया है। उदाहरण के लिए, भारतीय कंपनियों ने रूस की तेल और गैस परियोजनाओं में भागीदारी की है। इसी प्रकार रूस की कंपनियाँ भी भारत के ऊर्जा, रक्षा और बुनियादी ढांचे से जुड़े क्षेत्रों में निवेश करने में रुचि दिखा रही हैं। इस प्रकार दोनों देशों के बीच निवेश सहयोग धीरे-धीरे विकसित हो रहा है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग भी भारत-रूस आर्थिक संबंधों का एक महत्वपूर्ण आयाम है। दोनों देशों ने अंतरिक्ष अनुसंधान, परमाणु ऊर्जा, सूचना प्रौद्योगिकी और उन्नत तकनीकों के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने के लिए कई समझौते किए हैं। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) और रूस की अंतरिक्ष एजेंसी के बीच भी सहयोग देखा गया है। इसके अतिरिक्त कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साइबर सुरक्षा और नई तकनीकों के क्षेत्र में भी सहयोग की संभावनाएँ बढ़ रही हैं।

भारत और रूस के बीच फार्मास्यूटिकल और आईटी क्षेत्र में भी सहयोग की संभावनाएँ तेजी से बढ़ रही हैं। भारत विश्व के प्रमुख औषधि उत्पादक देशों में से एक है और रूस भारत से बड़ी मात्रा में दवाइयों का आयात करता है। भारतीय फार्मास्यूटिकल कंपनियाँ रूस के बाजार में अपनी उपस्थिति बढ़ाने का प्रयास कर रही हैं। इसी प्रकार भारत का सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र भी विश्व स्तर पर तेजी से विकसित हुआ है और रूसी कंपनियाँ भारत की आईटी सेवाओं में रुचि दिखा रही हैं। इससे दोनों देशों के बीच तकनीकी और आर्थिक सहयोग के नए अवसर उत्पन्न हो रहे हैं।

इस प्रकार भारत और रूस के बीच व्यापार और आर्थिक सहयोग धीरे-धीरे व्यापक और बहुआयामी रूप लेता जा रहा है। ऊर्जा व्यापार, परिवहन परियोजनाएँ, निवेश सहयोग, विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा फार्मास्यूटिकल और आईटी क्षेत्रों में बढ़ता सहयोग यह दर्शाता है कि दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंधों का भविष्य काफी संभावनाओं से भरा हुआ है। आने वाले समय में यदि व्यापारिक बाधाओं को कम किया जाए और नई आर्थिक परियोजनाओं को बढ़ावा दिया जाए, तो भारत और रूस के बीच आर्थिक सहयोग और अधिक मजबूत हो सकता है।

V. वैश्विक मंचों पर सहयोग

भारत और रूस के बीच सहयोग केवल द्विपक्षीय संबंधों तक सीमित नहीं है, बल्कि दोनों देश अंतरराष्ट्रीय और बहुपक्षीय मंचों पर भी एक-दूसरे के साथ समन्वय बनाए रखते हैं। वैश्विक राजनीति में बदलते शक्ति संतुलन, क्षेत्रीय संघर्षों और आर्थिक चुनौतियों के बीच भारत और रूस कई अंतरराष्ट्रीय संगठनों तथा मंचों के माध्यम से सहयोग करते रहे हैं। दोनों देश इस बात पर बल देते हैं कि अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था अधिक संतुलित, न्यायपूर्ण और बहुध्रुवीय होनी चाहिए, जहाँ सभी देशों के हितों को महत्व दिया जाए। इसी दृष्टिकोण के कारण विभिन्न वैश्विक मंचों पर भारत और रूस के बीच निरंतर सहयोग देखने को मिलता है।

भारत और रूस के बीच सहयोग का एक महत्वपूर्ण मंच ब्रिक्स (BRICS) है। ब्रिक्स समूह में ब्राज़ील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका जैसे उभरती अर्थव्यवस्थाओं वाले देश शामिल हैं। इस समूह का उद्देश्य वैश्विक आर्थिक व्यवस्था में विकासशील देशों की भूमिका को मजबूत बनाना और अंतरराष्ट्रीय आर्थिक संस्थाओं में संतुलन स्थापित करना है। भारत और रूस दोनों ही ब्रिक्स के सक्रिय सदस्य हैं और इस मंच के माध्यम से आर्थिक सहयोग, विकास और वैश्विक आर्थिक सुधार के मुद्दों पर मिलकर कार्य करते हैं। ब्रिक्स के अंतर्गत स्थापित न्यू डेवलपमेंट बैंक (NDB) भी विकासशील देशों की आधारभूत संरचना और विकास परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करता है। भारत और रूस इस बैंक के माध्यम से विकासशील देशों के आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के पक्षधर रहे हैं।

भारत और रूस के बीच सहयोग का एक और महत्वपूर्ण मंच शंघाई सहयोग संगठन (Shanghai Cooperation Organisation – SCO) है। यह संगठन एशिया क्षेत्र में सुरक्षा, आर्थिक सहयोग और क्षेत्रीय स्थिरता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कार्य करता है। भारत और पाकिस्तान को वर्ष 2017 में इस संगठन की पूर्ण सदस्यता प्राप्त हुई। रूस इस संगठन के संस्थापक देशों में से एक है और उसने भारत की सदस्यता का समर्थन किया था। SCO के माध्यम से भारत और रूस आतंकवाद, उग्रवाद और क्षेत्रीय सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर सहयोग करते हैं। इसके अतिरिक्त इस संगठन के माध्यम से मध्य एशिया के देशों के साथ भी आर्थिक और राजनीतिक सहयोग को बढ़ाने का अवसर मिलता है।

G-20 मंच पर भी भारत और रूस के बीच समन्वय देखा जाता है। जी-20 विश्व की प्रमुख विकसित और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं का समूह है, जिसका उद्देश्य वैश्विक आर्थिक स्थिरता, वित्तीय सहयोग और विकास को बढ़ावा देना है। भारत और रूस दोनों ही इस मंच के महत्वपूर्ण सदस्य हैं और वैश्विक आर्थिक नीतियों तथा विकास से जुड़े मुद्दों पर सहयोग करते हैं। वर्ष 2023 में भारत की अध्यक्षता में आयोजित जी-20 शिखर सम्मेलन ने विकासशील देशों के मुद्दों को वैश्विक मंच पर प्रमुखता से प्रस्तुत किया। इस दौरान भारत और रूस के बीच आर्थिक सहयोग, वैश्विक वित्तीय स्थिरता और ऊर्जा सुरक्षा जैसे विषयों पर संवाद हुआ।

भारत और रूस दोनों ही देश बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की अवधारणा का समर्थन करते हैं। उनका मानना है कि अंतरराष्ट्रीय राजनीति में शक्ति का संतुलन होना चाहिए और किसी एक देश या समूह का अत्यधिक प्रभुत्व नहीं होना चाहिए। बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था का अर्थ है कि विभिन्न क्षेत्रीय और वैश्विक शक्तियाँ मिलकर अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को संतुलित बनाए रखें। भारत और रूस दोनों ही इस विचार को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर आगे बढ़ाने का प्रयास करते हैं। यह दृष्टिकोण वैश्विक स्थिरता और संतुलन बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है।

संयुक्त राष्ट्र (United Nations) के मंच पर भी भारत और रूस के बीच सहयोग देखा जाता है। रूस संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य है और उसने कई अवसरों पर भारत के हितों का समर्थन किया है। विशेष रूप से संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता के लिए भारत की दावेदारी के संबंध में रूस ने सकारात्मक रुख अपनाया है। इसके अतिरिक्त अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर भी दोनों देशों के बीच कई बार समान दृष्टिकोण देखने को मिलता है।

वैश्विक सुरक्षा और आतंकवाद विरोधी प्रयासों के क्षेत्र में भी भारत और रूस के बीच सहयोग महत्वपूर्ण रहा है। दोनों देश लंबे समय से आतंकवाद को वैश्विक शांति और सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा मानते रहे हैं। विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत और रूस ने

आतंकवाद के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की आवश्यकता पर जोर दिया है। दोनों देशों ने आतंकवाद के वित्तपोषण को रोकने, सीमा पार आतंकवाद के विरुद्ध कार्रवाई करने और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सहयोग बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया है।

भारत और रूस के बीच रक्षा और सुरक्षा से जुड़े संवाद भी समय-समय पर आयोजित होते रहते हैं। इन बैठकों में क्षेत्रीय सुरक्षा, अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद, साइबर सुरक्षा और नई सुरक्षा चुनौतियों से संबंधित मुद्दों पर चर्चा की जाती है। इससे दोनों देशों के बीच रणनीतिक समझ और सहयोग को मजबूती मिलती है।

इस प्रकार वैश्विक मंचों पर भारत और रूस का सहयोग यह दर्शाता है कि दोनों देश अंतरराष्ट्रीय राजनीति में संतुलन, स्थिरता और सहयोग को बढ़ावा देने के पक्षधर हैं। ब्रिक्स, शंघाई सहयोग संगठन, जी-20 और संयुक्त राष्ट्र जैसे मंचों के माध्यम से दोनों देश न केवल अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हैं, बल्कि वैश्विक स्तर पर शांति, विकास और सहयोग को भी बढ़ावा देने का प्रयास करते हैं। आने वाले समय में भी इन मंचों के माध्यम से भारत और रूस के बीच सहयोग जारी रहने की संभावना है, जो वैश्विक राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

VI. समकालीन चुनौतियाँ और मुद्दे

भारत और रूस के बीच संबंध ऐतिहासिक रूप से मजबूत और भरोसेमंद रहे हैं, किंतु बदलती वैश्विक परिस्थितियों के कारण इन संबंधों के सामने कुछ नई चुनौतियाँ और जटिलताएँ भी सामने आई हैं। विशेष रूप से 21वीं सदी के तीसरे दशक में वैश्विक राजनीति में तेजी से हो रहे परिवर्तनों, क्षेत्रीय संघर्षों और आर्थिक प्रतिस्पर्धा ने अंतरराष्ट्रीय संबंधों की प्रकृति को प्रभावित किया है। इन परिस्थितियों का प्रभाव भारत-रूस संबंधों पर भी पड़ा है। यद्यपि दोनों देशों के बीच रणनीतिक साझेदारी बनी हुई है, फिर भी कई ऐसे मुद्दे हैं जो इन संबंधों की दिशा और भविष्य को प्रभावित कर सकते हैं।

इन चुनौतियों में सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा रूस-यूक्रेन युद्ध का प्रभाव है। फरवरी 2022 में रूस द्वारा यूक्रेन में सैन्य अभियान शुरू करने के बाद वैश्विक राजनीति में व्यापक परिवर्तन देखने को मिले। पश्चिमी देशों—विशेष रूप से अमेरिका और यूरोपीय संघ—ने रूस पर कई आर्थिक और वित्तीय प्रतिबंध लगाए। इन प्रतिबंधों का प्रभाव वैश्विक अर्थव्यवस्था, ऊर्जा बाजार और अंतरराष्ट्रीय व्यापार पर पड़ा। भारत ने इस संघर्ष के संदर्भ में संतुलित और स्वतंत्र विदेश नीति अपनाई। भारत ने संयुक्त राष्ट्र में कई अवसरों पर युद्ध समाप्त करने और संवाद के माध्यम से समाधान निकालने की आवश्यकता पर जोर दिया, किंतु उसने रूस के साथ अपने संबंधों को भी बनाए रखा। इस स्थिति ने भारत को एक कठिन कूटनीतिक संतुलन बनाए रखने की चुनौती के सामने खड़ा कर दिया।

रूस-यूक्रेन युद्ध का प्रभाव ऊर्जा और व्यापार के क्षेत्र में भी देखा गया। पश्चिमी देशों द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों के कारण रूस ने अपने ऊर्जा निर्यात के लिए नए बाजारों की ओर ध्यान दिया। इसी अवधि में भारत ने रूस से कच्चे तेल का आयात बढ़ाया। 2021 से पहले भारत रूस से कुल तेल आयात का केवल लगभग 1-2 प्रतिशत ही प्राप्त करता था, किंतु 2023 और 2024 तक यह बढ़कर लगभग 30-35 प्रतिशत तक पहुँच गया। इससे भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायता मिली, लेकिन साथ ही पश्चिमी देशों के साथ भारत के संबंधों के संदर्भ में कूटनीतिक दबाव भी उत्पन्न हुआ।

भारत के पश्चिमी देशों के साथ संबंध भी भारत-रूस संबंधों के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण चुनौती के रूप में सामने आते हैं। हाल के वर्षों में भारत और अमेरिका के बीच सामरिक, आर्थिक और तकनीकी सहयोग में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इसके अतिरिक्त भारत जापान, ऑस्ट्रेलिया और अन्य देशों के साथ भी सहयोग बढ़ा रहा है। उदाहरण के रूप में “क्वाड” (Quad) समूह में भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया शामिल हैं, जो हिंद-प्रशांत क्षेत्र में सहयोग को बढ़ावा देने का प्रयास कर रहे हैं। इन परिस्थितियों में भारत को रूस और पश्चिमी देशों दोनों के साथ संतुलित संबंध बनाए रखने की आवश्यकता होती है। यह संतुलन भारत की विदेश नीति के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती बन जाता है।

वैश्विक प्रतिबंध और आर्थिक दबाव भी भारत-रूस संबंधों को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारकों में शामिल हैं। रूस पर लगाए गए पश्चिमी प्रतिबंधों के कारण अंतरराष्ट्रीय वित्तीय प्रणाली, बैंकिंग और भुगतान व्यवस्था में कई परिवर्तन हुए हैं। इन प्रतिबंधों के कारण भारत और रूस के बीच व्यापारिक भुगतान व्यवस्था को लेकर भी कुछ व्यावहारिक समस्याएँ सामने आईं। दोनों देशों ने इन समस्याओं को दूर करने के लिए वैकल्पिक भुगतान प्रणाली विकसित करने और स्थानीय मुद्राओं में व्यापार बढ़ाने जैसे उपायों पर विचार किया है। इसके बावजूद वैश्विक वित्तीय प्रतिबंधों का प्रभाव दोनों देशों के आर्थिक सहयोग पर देखा जा सकता है।

एक अन्य महत्वपूर्ण मुद्दा रक्षा खरीद में विविधीकरण से संबंधित है। लंबे समय तक भारत अपनी रक्षा आवश्यकताओं के लिए रूस पर काफी हद तक निर्भर रहा है। किंतु पिछले कुछ वर्षों में भारत ने अपनी रक्षा खरीद नीति में विविधता लाने का प्रयास किया है।

भारत अब अमेरिका, फ्रांस, इज़राइल और अन्य देशों से भी रक्षा उपकरण खरीद रहा है। उदाहरण के लिए भारत ने फ्रांस से राफेल लड़ाकू विमान खरीदे हैं और अमेरिका से भी कई रक्षा समझौते किए हैं। इस परिवर्तन का उद्देश्य भारत की रक्षा प्रणाली को अधिक आधुनिक और विविध बनाना है। हालाँकि इससे रूस की भारत के रक्षा क्षेत्र में पारंपरिक भूमिका कुछ हद तक प्रभावित हो सकती है।

चीन-रूस संबंधों का प्रभाव भी भारत-रूस संबंधों के संदर्भ में महत्वपूर्ण माना जाता है। हाल के वर्षों में रूस और चीन के बीच राजनीतिक, आर्थिक और सामरिक सहयोग में वृद्धि हुई है। रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद पश्चिमी देशों से बढ़ते तनाव के कारण रूस ने चीन के साथ अपने संबंधों को और अधिक मजबूत किया है। दूसरी ओर भारत और चीन के बीच सीमा विवाद तथा रणनीतिक प्रतिस्पर्धा मौजूद है। इस स्थिति में रूस को दोनों देशों के साथ संतुलित संबंध बनाए रखने की आवश्यकता होती है। यद्यपि रूस ने कई अवसरों पर भारत और चीन के बीच संवाद का समर्थन किया है, फिर भी चीन-रूस निकटता भारत के लिए एक सामरिक चुनौती के रूप में देखी जाती है।

अंतरराष्ट्रीय शक्ति संतुलन में बदलाव भी भारत-रूस संबंधों को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। आज वैश्विक राजनीति में कई नई शक्तियाँ उभर रही हैं और अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में परिवर्तन हो रहा है। अमेरिका, चीन, यूरोप और अन्य शक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है। इस परिवर्तित वैश्विक व्यवस्था में भारत और रूस दोनों ही देश अपनी-अपनी रणनीतिक स्थिति को मजबूत करने का प्रयास कर रहे हैं। भारत एक उभरती हुई वैश्विक शक्ति के रूप में अपनी भूमिका को विस्तारित कर रहा है, जबकि रूस भी वैश्विक राजनीति में अपनी प्रभावशीलता बनाए रखने का प्रयास कर रहा है। इन परिस्थितियों में दोनों देशों के बीच सहयोग के नए अवसर भी पैदा होते हैं और कुछ चुनौतियाँ भी सामने आती हैं।

ऊर्जा क्षेत्र में बाजार के उतार-चढ़ाव भी भारत-रूस संबंधों को प्रभावित कर सकते हैं। वैश्विक ऊर्जा बाजार में कीमतों में लगातार परिवर्तन होते रहते हैं। तेल और गैस की कीमतों में वृद्धि या कमी का प्रभाव ऊर्जा आयात करने वाले देशों की अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। भारत जैसे बड़े ऊर्जा उपभोक्ता देश के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने ऊर्जा स्रोतों का विविधीकरण करे। इसी प्रकार रूस के लिए भी यह महत्वपूर्ण है कि वह अपने ऊर्जा निर्यात के लिए विभिन्न देशों के साथ स्थिर और दीर्घकालिक संबंध बनाए रखे। इस संदर्भ में ऊर्जा बाजार की अस्थिरता दोनों देशों के लिए एक चुनौती बन सकती है।

इसके अतिरिक्त वैश्विक राजनीति में बढ़ती भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा भी भारत-रूस संबंधों को प्रभावित करती है। आज विभिन्न क्षेत्रीय और वैश्विक शक्तियाँ अपने प्रभाव को बढ़ाने के लिए प्रतिस्पर्धा कर रही हैं। हिंद-प्रशांत क्षेत्र, यूरोप और एशिया के विभिन्न क्षेत्रों में सामरिक प्रतिस्पर्धा दिखाई देती है। भारत और रूस दोनों ही इन परिस्थितियों में अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए सहयोग बनाए रखने का प्रयास कर रहे हैं।

इन सभी चुनौतियों के बावजूद भारत और रूस के बीच संबंधों की मूल भावना स्थिर बनी हुई है। दोनों देशों के बीच दीर्घकालिक विश्वास, रणनीतिक समझ और साझा हितों के कारण यह संबंध अभी भी मजबूत बने हुए हैं। बदलती वैश्विक परिस्थितियों में भी भारत और रूस अपने संबंधों को बनाए रखने और उन्हें नए क्षेत्रों में विस्तारित करने का प्रयास कर रहे हैं। भविष्य में इन चुनौतियों का समाधान कूटनीतिक संवाद, आर्थिक सहयोग और रणनीतिक समझ के माध्यम से किया जा सकता है।

इस प्रकार समकालीन वैश्विक परिस्थितियों में भारत-रूस संबंधों के सामने कई महत्वपूर्ण चुनौतियाँ और मुद्दे मौजूद हैं, किंतु साथ ही इन चुनौतियों के बीच सहयोग के नए अवसर भी उत्पन्न हो रहे हैं। यही कारण है कि अंतरराष्ट्रीय राजनीति में भारत-रूस संबंध आज भी महत्वपूर्ण और प्रासंगिक बने हुए हैं।

भारत और रूस के संबंधों का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि यह केवल पारंपरिक मित्रता पर आधारित संबंध नहीं हैं, बल्कि यह एक व्यापक रणनीतिक साझेदारी के रूप में विकसित हुए हैं। दोनों देशों के बीच सहयोग के कई आयाम हैं—जिनमें रक्षा, ऊर्जा, व्यापार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा वैश्विक मंचों पर समन्वय शामिल हैं। अंतरराष्ट्रीय राजनीति में तेजी से हो रहे परिवर्तनों के बावजूद भारत-रूस संबंधों की प्रासंगिकता बनी हुई है। इस संबंध को समझने के लिए इसके सामरिक महत्व, वैश्विक राजनीति में भूमिका, आर्थिक और ऊर्जा सहयोग के प्रभाव तथा भविष्य की संभावनाओं का समग्र विश्लेषण आवश्यक है।

भारत-रूस संबंधों का सामरिक महत्व विशेष रूप से रक्षा और सुरक्षा के क्षेत्र में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। लंबे समय से रूस भारत का प्रमुख रक्षा सहयोगी रहा है और भारत की सैन्य क्षमता को विकसित करने में रूस की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारत की रक्षा प्रणाली में रूसी तकनीक और उपकरणों का महत्वपूर्ण स्थान है। सुखोई-30 एमकेआई लड़ाकू विमान, टी-90 टैंक, ब्रह्मोस मिसाइल और एस-400 वायु रक्षा प्रणाली जैसे उदाहरण इस सहयोग की गहराई को दर्शाते हैं। इन परियोजनाओं ने भारत की सैन्य

क्षमता को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके अतिरिक्त संयुक्त सैन्य अभ्यास और रक्षा तकनीक के क्षेत्र में सहयोग दोनों देशों के बीच सामरिक विश्वास को और अधिक मजबूत बनाता है। इस दृष्टि से देखा जाए तो भारत-रूस रक्षा सहयोग केवल सैन्य उपकरणों की खरीद तक सीमित नहीं है, बल्कि यह दीर्घकालिक रणनीतिक साझेदारी का एक महत्वपूर्ण आधार है।

वैश्विक राजनीति में भी भारत-रूस संबंधों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। दोनों देश अंतरराष्ट्रीय मंचों पर कई मुद्दों पर समान दृष्टिकोण रखते हैं। विशेष रूप से बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की अवधारणा के संदर्भ में भारत और रूस का दृष्टिकोण काफी हद तक समान है। दोनों देश यह मानते हैं कि अंतरराष्ट्रीय राजनीति में शक्ति का संतुलन होना चाहिए और वैश्विक निर्णय-प्रक्रिया में सभी देशों की भागीदारी सुनिश्चित होनी चाहिए। इसी कारण ब्रिक्स, शंघाई सहयोग संगठन और जी-20 जैसे मंचों पर दोनों देशों के बीच सहयोग देखा जाता है। इसके अतिरिक्त संयुक्त राष्ट्र में भी कई मुद्दों पर दोनों देशों के बीच समन्वय दिखाई देता है। इस प्रकार वैश्विक स्तर पर भारत और रूस का सहयोग अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को अधिक संतुलित और स्थिर बनाने में योगदान देता है।

भारत और रूस के बीच आर्थिक और ऊर्जा सहयोग का प्रभाव भी द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण रहा है। हाल के वर्षों में ऊर्जा व्यापार दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंधों का प्रमुख आधार बन गया है। रूस भारत के लिए कच्चे तेल और ऊर्जा का एक महत्वपूर्ण स्रोत बनकर उभरा है। विशेष रूप से रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद भारत द्वारा रूस से तेल आयात में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इससे भारत की ऊर्जा सुरक्षा को मजबूती मिली है और दोनों देशों के बीच व्यापारिक संबंधों में भी वृद्धि हुई है। इसके अतिरिक्त परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में कुडनकुलम परियोजना जैसे सहयोगात्मक प्रयास भारत-रूस ऊर्जा साझेदारी को और अधिक मजबूत बनाते हैं। आर्थिक सहयोग के क्षेत्र में व्यापार, निवेश, विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा परिवहन परियोजनाओं में भी सहयोग की संभावनाएँ बढ़ रही हैं।

क्षेत्रीय और वैश्विक स्थिरता के संदर्भ में भी भारत-रूस संबंधों का योगदान महत्वपूर्ण माना जाता है। दोनों देश अंतरराष्ट्रीय शांति, सुरक्षा और विकास को बढ़ावा देने के पक्षधर हैं। आतंकवाद, उग्रवाद और क्षेत्रीय संघर्ष जैसे मुद्दों पर दोनों देशों के बीच सहयोग देखा जाता है। भारत और रूस कई अंतरराष्ट्रीय मंचों पर आतंकवाद के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की आवश्यकता पर बल देते रहे हैं। इसके अतिरिक्त मध्य एशिया, एशिया-प्रशांत क्षेत्र और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में स्थिरता बनाए रखने के लिए भी दोनों देशों के बीच रणनीतिक संवाद होता रहा है। इस प्रकार भारत-रूस सहयोग केवल द्विपक्षीय हितों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका प्रभाव व्यापक क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर भी दिखाई देता है।

भविष्य की संभावनाओं के संदर्भ में देखा जाए तो भारत-रूस संबंधों के सामने कई अवसर मौजूद हैं। रक्षा, ऊर्जा और अंतरिक्ष जैसे पारंपरिक क्षेत्रों के अतिरिक्त विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साइबर सुरक्षा और डिजिटल अर्थव्यवस्था जैसे नए क्षेत्रों में सहयोग की संभावनाएँ बढ़ रही हैं। इसके अलावा व्यापार और निवेश को बढ़ाने के लिए भी दोनों देशों के बीच नई पहलें की जा सकती हैं। अंतरराष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा (INSTC) जैसी परियोजनाएँ भारत और रूस के बीच व्यापारिक संपर्क को और अधिक मजबूत बनाने में सहायक हो सकती हैं।

हालाँकि भविष्य की संभावनाओं के साथ कुछ चुनौतियाँ भी मौजूद हैं। वैश्विक शक्ति संतुलन में बदलाव, रूस-यूक्रेन युद्ध के प्रभाव, पश्चिमी देशों के साथ भारत के बढ़ते संबंध और चीन-रूस निकटता जैसे कारक इन संबंधों को प्रभावित कर सकते हैं। फिर भी भारत और रूस के बीच लंबे समय से स्थापित विश्वास और रणनीतिक समझ इन चुनौतियों से निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

इस प्रकार विश्लेषणात्मक दृष्टि से देखा जाए तो भारत-रूस संबंध अंतरराष्ट्रीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण और स्थिर साझेदारी के रूप में सामने आते हैं। यह संबंध केवल ऐतिहासिक मित्रता का परिणाम नहीं है, बल्कि साझा हितों, रणनीतिक सहयोग और वैश्विक स्तर पर संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता पर आधारित है। भविष्य में भी यदि दोनों देश अपने आर्थिक, तकनीकी और सामरिक सहयोग को और अधिक विकसित करते हैं, तो यह साझेदारी अंतरराष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहेगी।

VII. निष्कर्ष

भारत और रूस के संबंध अंतरराष्ट्रीय राजनीति में लंबे समय से स्थिरता और विश्वास पर आधारित साझेदारी के रूप में स्थापित रहे हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो दोनों देशों के बीच सहयोग रक्षा, ऊर्जा, विज्ञान और औद्योगिक विकास जैसे अनेक क्षेत्रों में विकसित हुआ है। वर्ष 2014 में भारत के राजनीतिक नेतृत्व में परिवर्तन और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में नई सरकार के गठन के बाद भारत की विदेश नीति में अधिक सक्रियता और व्यवहारिकता दिखाई दी। इस अवधि में भारत ने अपने पारंपरिक मित्र देशों के साथ संबंधों को नए वैश्विक परिवेश के अनुरूप आगे बढ़ाने का प्रयास किया, जिसके परिणामस्वरूप भारत-रूस संबंधों में भी नई गति और सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिले।

2014 के बाद दोनों देशों के बीच रक्षा और ऊर्जा क्षेत्र में विशेष प्रगति हुई। आधुनिक रक्षा प्रणालियों की खरीद, संयुक्त सैन्य अभ्यास तथा रक्षा उत्पादन सहयोग ने दोनों देशों के बीच सामरिक विश्वास को और मजबूत किया। ऊर्जा क्षेत्र में रूस भारत के लिए एक महत्वपूर्ण आपूर्तिकर्ता बनकर उभरा, विशेष रूप से हाल के वर्षों में कच्चे तेल और ऊर्जा सहयोग के कारण दोनों देशों के आर्थिक संबंधों में उल्लेखनीय विस्तार हुआ है। इसके अतिरिक्त विज्ञान, प्रौद्योगिकी और अंतरिक्ष जैसे क्षेत्रों में भी सहयोग की संभावनाएँ बढ़ती दिखाई देती हैं।

वैश्विक स्तर पर भी भारत और रूस का सहयोग महत्वपूर्ण है। बहुपक्षीय मंचों पर दोनों देशों की सहभागिता यह दर्शाती है कि वे वैश्विक राजनीति में संतुलन, विकास और सहयोग को बढ़ावा देने के पक्षधर हैं। वर्तमान अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों में अनेक चुनौतियाँ मौजूद होने के बावजूद दोनों देशों के बीच संवाद और सहयोग की परंपरा बनी हुई है।

समग्र रूप से कहा जा सकता है कि भारत और रूस के बीच संबंध केवल ऐतिहासिक मित्रता तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यह साझा रणनीतिक हितों और दीर्घकालिक सहयोग पर आधारित साझेदारी है। भविष्य में ऊर्जा, रक्षा, तकनीक और आर्थिक सहयोग के क्षेत्रों में दोनों देशों के बीच संबंधों के और अधिक सुदृढ़ होने की संभावनाएँ दिखाई देती हैं। इस प्रकार भारत-रूस संबंध अंतरराष्ट्रीय राजनीति में संतुलन और सहयोग के महत्वपूर्ण आधार के रूप में आगे भी अपनी भूमिका निभाते रहेंगे।

संदर्भ सूची

1. भारत सरकार. (2024). भारत-रूस द्विपक्षीय संबंध रिपोर्ट. नई दिल्ली: विदेश मंत्रालय।
2. पंत, हर्ष वी. (2019). भारतीय विदेश नीति: एक परिचय. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. स्टोबदान, पी. (2018). भारत-रूस रणनीतिक साझेदारी: चुनौतियाँ और अवसर. नई दिल्ली: इंस्टीट्यूट फॉर डिफेंस स्टडीज एंड एनालिसिस।
4. मेनन, शिवशंकर. (2021). भारत और बदलती विश्व व्यवस्था. नई दिल्ली: पेंगुइन रैंडम हाउस।
5. लो, बोबो. (2020). रूस और नई विश्व व्यवस्था. लंदन: चैथम हाउस पब्लिकेशन।
6. चौलिया, एस. (2022). बदलते भू-राजनीतिक परिवेश में भारत-रूस संबंध. इंटरनेशनल स्टडीज, 59(3), 245-262।
7. सिंह, संदीप. (2023). रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद भारत-रूस ऊर्जा सहयोग. एशियाई सुरक्षा अध्ययन जर्नल, 18(2), 101-118।
8. कुमार, राजेश. (2022). इक्कीसवीं सदी में भारत-रूस रक्षा सहयोग. सामरिक विश्लेषण, 46(4), 365-378।
9. त्रेनिन, दिमित्री. (2017). रूस की वैश्विक भूमिका. कैम्ब्रिज: पॉलिटी प्रेस।
10. टेलिस, एशले जे. (2021). भारत की सामरिक नीति और वैश्विक राजनीति. वाशिंगटन डी.सी.: कार्नेगी एंडोमेंट।
11. भद्रकुमार, एम. के. (2023). बहुध्रुवीय विश्व में भारत-रूस संबंध. एशियन अफेयर्स, 54(1), 72-89।
12. सखूजा, विजय. (2020). हिंद-प्रशांत क्षेत्र में रूस की भूमिका. मैरिटाइम अफेयर्स, 16(1), 1-14।
13. चौधरी, डी. आर. (2024). आर्थिक प्रतिबंधों के बाद भारत-रूस आर्थिक संबंध. इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 59(8), 25-30।
14. वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय. (2024). भारत-रूस व्यापार सांख्यिकी रिपोर्ट. नई दिल्ली: भारत सरकार।
15. ब्रिक्स सचिवालय. (2023). ब्रिक्स आर्थिक सहयोग रिपोर्ट. शंघाई: ब्रिक्स सचिवालय।
16. शंघाई सहयोग संगठन. (2022). एससीओ वार्षिक रिपोर्ट. बीजिंग: एससीओ सचिवालय।
17. अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी. (2024). वैश्विक ऊर्जा परिदृश्य रिपोर्ट. पेरिस: आईईए।
18. विश्व बैंक. (2023). वैश्विक आर्थिक संभावनाएँ. वाशिंगटन डी.सी.: विश्व बैंक।
19. स्टॉकहोम अंतरराष्ट्रीय शांति अनुसंधान संस्थान (SIPRI). (2024). अंतरराष्ट्रीय हथियार हस्तांतरण की प्रवृत्तियाँ. स्टॉकहोम: SIPRI।
20. काउंसिल ऑन फॉरेन रिलेशंस. (2023). रूस-यूक्रेन युद्ध और वैश्विक भू-राजनीति. न्यूयॉर्क: CFR रिपोर्ट।

International Journal of Advanced Research in Education and Technology

ISSN: 2394-2975

Impact Factor: 8.152